रिकॉर्ड :– इनसाफ की डगर पे.... ॐ पिताश्री 4/12/62
ओमशान्ति। यह गीत बच्चों ने सुना। इस संगम के समय एक तरफ है डबल हिंसा की लड़ाई, दूसरे तरफ डबल अहिंसा की लड़ाई; क्योंकि यह है संगमयुग। बरोबर एक तरफ योगबल से अपना राज्य (अ)थवा सारी सृष्टि की राजाई लेने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं, दूसरे तरफ हिंसक लड़ाई चल रही है (आ)पस में हद के टुकड़े लेने लिए। उनको जिस्मानी हद की लड़ाई कही(हा) जाती(ता)। रूहानी लड़ाई एक ही समय (बा)प आकर सिखलाते हैं। तुम इस रूहानी योगबल की लड़ाई से माया पर जीत पहन जगतजीत बन(ते) हो। जानते हो बरोबर हम सारी सृष्टि पर विजय पहन रहे हैं। और कोई की बुद्धि में यह बातें न हैं। (हिं)सक लड़ाई से कोई सारी सृष्टि पर विजय नहीं पाए सकते। गीता के कह... अनुसार परमपिता प॰ से ..... योग की शक्ति ले हम सो सारी सृष्टि के मालिक देवी–देवता बन रहे हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि ज्ञान ..... हीं (खंग) अथवा ज्ञान कटारी, ज्ञान तलवार आदि कहा जाता है। यह कोई स्थूल हथियार नहीं। यह है ज्ञा... चटके। हथियार कोई नहीं है; और फिर यह भक्त माला भी है जिसके लिए भागवत में भी वर्णन है। मनुष्य कहते हैं कृष्ण की गऊशाला थी। वास्तव में गाई गई है ब्रह्मा की गऊशाला। कृष्ण की तो है नहीं। देखते हो ..... इस गऊशाला में परमपिता प॰, जो ज्ञान सागर है, वो बैठ ज्ञान ..... घास खिलाते हैं। (इन माता) गइयाँ क्यों कहते; क्योंकि इन पर काम–कटारी चलती है। यह है नं॰वन हिंसा। अभी बहुत लोग (गऊ)शालाएँ बना रहे हैं, गऊ को कसाइयों से बचाने लिए। फिर इतनी गइ(यों) की पालना भी करनी पड़े। ...ड़ गऊ अथवा बूढ़ी गऊ हो जाती है तो गऊशाला में रख देते हैं। शुरू में जब क्रिश्चियन लोग न थे, (मुस)लमान भी न थे तो यह गऊ वध नहीं होता था। यह रसम क्रिश्चियन और मुसलमानों ने डाली है। .....यहाँ तो मनुष्यों को भी अन्न नहीं मिलता। सन्यासी भी ढेर हैं जिन्हों ..... मुफ्त में खाना मिलता है। देखो, एक बच्चे ने ..... को कहा ..... अच्छी नहीं लगती है। गाँधी भी अहिंसा चाहते थे। हमको अभी वैराग आया है। हम यह हिंसा नहीं करेंगे। तो वो पूछते हैं– क्या तुम भीख का अन्न खावेंगे? फिर तो तुम व(ण्डर) (खा)वेंगे। .... बहुत हैं, जो मुफ्त में अन्न खाते हैं। भल सन्यासी पवित्र रहते हैं। पवित्र तो ...भी रह सकते हो, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी कर सकते हो। कर्म कर शरीर निर्वाह अर्थ धंधा कर ...जन पाना है। एक तरफ सन्यासी पवित्र रहने कारण भारत को थमाते हैं। सतयुग–त्रेता में तो वाइलेंस ... थी। अभी इस ... वर्ल्ड में सभी धर्मों में कितने सन्यासी होंगे? भारत में तो बहुत हैं। भारत बहुत पवित्र था .... फिर अपवित्र बना है। वैराग मार्ग सन्यासियों का है, जिसको हठयोग कहा जाता है। उन्हों को भी .... तो ..... गइयों को भी रखा जाय तो कितना अनाज आदि चाहिए! भल कहते हैं अनाज बहुत; परन्तु आता तो विलायत से है। अगर अभी लड़ाई लग जाय तो अनाज आना बन्द हो जाय। फैमन पड़ जाय। ..... तो पहले मरे। फिर मनुष्यों को भी भूख मरना पड़े। बिल्कुल ही गरीब मुल्क है। अभी ऐसे गरीब ..... को साहुकार कौन बनावें? बरोबर अभी कलियुग है। अपन लिखते भी हैं, आज भारत बेगर है। .... प्रिन्स होगा। अभी कौड़ी जैसे भारत को हीरे जैसा बनाने वाला कौन? अभी तुम बच्चों को ज्ञान–योग .... से भारत को फिर से स्वर्ग बनाना है। तुम हो डबल अहिंसक। वो सारी दुनिया के मनुष्य हैं डबल (हिं)सक। पहले2 मुख्य हिंसा है काम कटारी की। बाबा भी कहते हैं इन 5 विकार दुश्मनों को जीतो। उसमें मु(ख्य) है काम। यह बड़ा (दु)श्मन है। उनको जीतना है। इसलिए बाप के साथ प्रतिज्ञा भी करते हैं। कहते हैं अगर इस अन्तिम जन्म में तुम पवित्रता की प्रतिज्ञा पर कायम रहे तो ... 21 जन्म पवित्र देवी–(देव)ता तुम बनने वाले हो। कितनी जबरदस्त ..... है, भीती है! तुम पवित्र बन रहे हो। इतने सभी ..... हैं, सभी पवित्र बनते हैं। सतयुग आदि में कितने पवित्र होंगे। ज़रूर संगमयुग पर पवित्र

(ब)ने होंगे। सतयुग में है ल॰ना॰ का राज्य। झाड़ भी छोटा है। अभी उनका सैपलिंग लग रहा है। वो फिर स्वर्ग में आवेंगे। (ज्ञ)ान सुनने लिए तो बहुत आवेंगे। सिंध से लेकर सुनते आते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जावेगी। तुम्हारे (ब)ड़े2 भाषण होंगे। सभी आकर सुनेंगे। प्रजा बनने वालों पर कुछ न कुछ असर होगा। ज्ञान का विनाश नहीं (हो)ता है। कोई बहुत धारणा करते हैं तो ऊँच पद, कम धारणा करते तो कम पद पाते। अभी देखो विष्णु को भी हिंसक समझ लिया है। कहते हैं विष्णु ने स्वदर्शन चक्कर से मारा था। .....यत को ललकारा था कि इन दुश्मनों को मारो। समझते हैं महाभारत लड़ाई के बाद स्वर्ग की स्थापना हुई। संगम पर जो मरे होंगे वो स्वर्ग में जाते होंगे। लड़ाइयाँ तो बहुत लगी हैं; परन्तु स्वर्ग कोई भी गया नहीं है। स्वर्ग में तो तब जाय जबकि भारत में स्वर्ग की स्थापना हो। नर्क का अंत। अभी संगम पर दो लड़ाई हो जाती हैं। गीता में है– युद्ध के मैदान में जो शरीर छोड़ेगा... अब (अ)पन तो माया पर जीत पहन स्वर्ग के मालिक बनते हैं। यह है अहिंसक लड़ाई। गाँधी भी अहिंसा ही (मां)गते थे। यहाँ तो देखो हिंसा ही हिंसा हो गई है। माताओं पर भी हिंसा, गइयों पर भी हिंसा, ... की भी हिंसा। तीनों पर हिंसा हो रही है। गइयों पिछाड़ी भी लाखों रुपया (इ)कट्ठे करते रहते। (ग)इयों से पहले तो मनुष्य का ख्याल करना चाहिए। मनुष्य का ही अमूल्य जीवन कहा जाता है। मनुष्यों को क्यों मारते रहते? लड़ाई बंद नहीं करते और गइयों–जनावरों का ख्याल करते रहते। यह कहाँ की .....? (अ)भी बाबा आकर सभी हिंसा बंद कर देते हैं। इस समय माताओं पर काम कटारी भी तेज़ है; क्योंकि (त)मोप्रधान माया है। गीता में भी लगा हुआ है कामेषु, क्रोधेषु। अबलाओं को कितना मारते हैं। ज(ब) (को)ई भी थोड़ा आश्रम पर आय ज्ञान सुनते हैं तो उनको फौरन ही प्रतिज्ञा लिखाना चाहिए कि बरोबर (आ)त्मा शिवबाबा की सन्तान है। फिर साकार में हमारा बाप ब्रह्मा है, जिस द्वारा बाबा ज्ञान देते हैं। ब्राह्म(ण) ... देवता बनने वाले हैं। मैं अपन को ब्रह्मा मुखवंशावली समझता हूँ। हम कभी विख न पिवेंगे, ऐसी प्रति(ज्ञा) (लि)खाए लेना चाहिए तो फिर अगर कभी भी कोई खिटपिट करे तो कोर्ट में भी लिखत दिलाए सकते ...। एक बाप के बच्चे भाई–बहन हो गए, फिर क्रिमिनल एसाल्ट तो कर न सके। जैसे सन्यासी प्रतिज्ञा करते हैं। (ह)मने भी प्रतिज्ञा की है कि हम विकार में न जावेंगे। धरत परिए धर्म न छोड़िये। फिर यह विकार की बात (क्यों) करते। लिखत होगी तो फिर कोई कुछ भी कर न सकेंगे। थोड़ा भी मम्मा–बाबा कहे तो फौरन लिख..... (चा)हिए कि हम शिववंशी ब्रह्मा की सन्तान हैं। फिर तो भाई–बहन हो गए। सौतेली बहन पर भी काम–कटारी लाना क्रिमिनल एसाल्ट कहा जाता। यह कायदा नहीं। सौतेले पर कोई काम–कटारी चला न सके। चाचे की (ल)ड़की पर क्रिमिनल एसाल्ट कर न सके। तो सेन्टर पर जब अलाउ किया जाता है तो पहले प्रतिज्ञा लिखाना (चा)हिए। हम कभी स्त्री ..... के साथ हिंसा न करेंगे। फिर भल कोर्ट में भी बात आ जाए तो वाह2 हो जाए; इसलिए (ब)हुत चाहिए, इसमें चुस्ती भी बहुत चाहिए। बाबा ने आकर ..... अनपढ़ को उठाया है, न स्कूल में पढ़ी हुई है, न ....शास्त्र पढ़ी है, तो डबल अणपढ़ हो गई। अबलाएँ क्या जाने शास्त्रों आदि से! तो बेहद का बाप ज्ञान का (सा)गर बहुत अच्छी रीत समझाते हैं। विष्णु की बात पर भी तुम समझाए सकती हो कि विष्णु के पास ये ज्ञान के (अ)लंकार हैं सो भी वास्तव में ये अलंकार विष्णु के नहीं हैं, ये हैं संगमयुगी ब्राह्मणों के अलंकार। विष्णु तो (सूक्ष्मव)तन वासी है। वास्तव में हथियार होने चाहिए ब्राह्मण–ब्राह्मणियों को; परन्तु अपन पास भी स्थायी तो नहीं हैं, अस्थायी हैं। ब्रह्मा–सरस्वती को भी हथियार दे न सके। विष्णु का चित्र मशहूर है। हम तो ठहरे स्थूलवतन (वा)सी अथवा संगमवतन वासी। दुनिया के मनुष्य हैं कलियुग वासी, हम हैं संगमयुग वासी। दुनिया ..... संगमयुग भी है। वो तो कहेंगे 40 हज़ार वर्ष जब गुजरे तब सतयुग की आदि और कलियुग का अन्त ..... तो ब्रह्म। कुमार–कुमारियाँ तो संगमयुग पर बैठी हो, यह है ऊँच ते ऊँच संगमयुग .....

(क)ल्याणकारी जबकि हम शूद्र से ब्राह्मण, ब्राह्मण से देवता बनते हैं। ये बहुत कल्याणकारी धर्माऊ युग है। धर्माऊ ...ह कल्याणकारी और अधर्माऊ अकल्याणकारी। अभी तक धर्माऊ संगमयुग पर हो। संगम को जान लिया है। .... पता पड़ा है ज़रूर अब कलियुग खत्म हो और सतयुग आने वाला है, जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप ... कहते हैं– बच्चे, इस पुरानी दुनिया में ये तुम्हारा अन्तिम जन्म है। फिर नया जन्म सतयुग में होना है; इस(लि)ए अब तुमने जीते जी नया जन्म लिया है। माँ–बाप पास, सन्यासियों पास जो जाते हैं वो कोई माँ–बाप पास नहीं ...ते। वो गा न सके तुम मात–पिता...। वो तो सुख को मानते ही नहीं। तुम वो अथाह सुख पाने लिए मात–पिता पास ..... हो। ये मात–पिता और परमपिता परमात्मा है ज्ञान का सागर। वो आकर हम, तुमको समझाते हैं। वही खूबी है। इनकी (आ)त्मा भी इन कानों से सुन रही है। सबसे नज़दीक है ये, फिर मम्मा है नज़दीक। पहले बाबा सुनता है। तो जो पहले (सु)नते हैं, नम्बर भी पहले लेते हैं। मम्मा भी बाजू में रहती है। ये ड्रामा का राज़ है माता–पिता, ब्रह्मा और सरस्वती ... का रखा है। चित्रों में अलंकार दिए हैं सो भी ड्रामा अनुसार कल्प पहले भी ऐसे ही चित्र बने थे। अब तुम (बच्चों) को समझाया जाता है कि ये हथियार ब्राह्मणों के हैं जो ही त्रिकालदर्शी हैं। तीनों लोकों को जानते हैं .....(स्व)दर्शन चक्कर है। उन्होंने फिर चक्कर को चरखा बना दिया है। तो यह सभी हथियार है वास्तव में तुम ब्राह्मणों के। .....न की शंख ध्वनि तुम करते हो। ज्ञान तलवार भी अपनी ही है। स्त्री और पुरुष के बीच में ज्ञान तलवार (हो) तो एक/दो पर काम कटारी चला न सके; क्योंकि ज्ञान से समझते हैं हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। .....गर काम कटारी चलाई तो फिर धर्मराज बाबा खाल उतारेगा। यह 5 विकार बहुत शत्रु हैं। इसलिए ..... खाना बहुत ज़रूरी है। तुम गाते भी हो, ब्रह्मा है प्रजापिता, आदिदेव। तो ज़रूर नई प्रजा ही रची होगी। (ब्रह्मा) की वंशावली पहले2 ब्राह्मण। सतयुग में हैं देवताएँ। कलियुग में हैं शूद्र। ब्राह्मण हैं संगमयुग पर। द्वापर ... लेकर वो पुजारी ब्राह्मण निकले हैं। वो हैं कुख वंशावली। प्वाइंट तो बहुत समझाते हैं। जैसे डॉक्टरी, बैरिस्टरी (क)रते हैं तो कितनी प्वाइंट बुद्धि में रहती हैं। डॉक्टर पास बहुत प्वाइंट्स होती हैं। वैद्यों के पास भी बहुत बूटियाँ होती हैं। ..... बैठ दवाइयाँ बनाते हैं। यह भी है अविनाशी ज्ञान रत्न। मनुष्यों ने फिर जवाहरों की अंगूठियाँ आदि ...नाई हैं। यह ज्ञान बड़ा पेचीदा है। विष्णु के चित्र पर भी अच्छी रीत समझाना पड़े। आज मंगल है ...। मंगल भगवान विष्णु....। अभी गरुड़ पर थोड़े ही सवारी होती है। हाँ, स्वर्ग में ऐसे विमान होते हैं। बॉम्बे ... एक मोटर भी आई थी, जिसका हंस का शैप दिया था सामने। बाकी गरुड़ पर या कोई जनावर पर (सवारी थोड़े) ही होती है। यह तो भक्तिमार्ग में गुड़ियाँ बना दी हैं। भक्तिमार्ग में कृष्ण को कहाँ सांवरा, कहाँ गौरा बनाया है। अगर कृष्ण की जोड़ी बनाते तो दोनों को काला बना न सके। एक को सांवरा, एक को गौरा दिखाते हैं। रास में फिर .... गौरा दिखाते। आजकल तो राम को भी काला कर दिया है। अंधश्रद्धा में जो आता सो बनाते रह..... को भी इतनी भुजाएँ और फिर सितार भी है। अभी ज्ञान सितार वा मुरली से थोड़े ही दिया जाता है। . इललिट्रेट बुद्धि बन पड़े हैं। जो एकदम लिट्रेट थे वो आर्य थे। अभी इललिट्रेट अण आर्य(बेसमझ) बन गए ... फिर अपन को समझदार समझ रहे हैं। कल्प की आयु अरबों बरस कह देते, क्या यह समझ है! अभी बाप ..... है कि यह सभी बेसमझ है, जो कहते– कल्प की आयु अरबों बरस है। तुम्हारे पास सिद्ध करने लिए चित्र भी हैं। क्लीयर कर सकते हो। अपन भी आगे अरबों बरस, 84 लाख योनियाँ समझते थे। अभी समझते ...ने हुए थे। सो भी सभी नहीं समझेंगे। जो हमारे धर्म के होंगे उनका ही सैपलिंग लगेगा। तो यह विष्णु को अलंकार दिखाए हैं, वो हैं तुम ब्राह्मणों के; परन्तु तुम हो गुप्त। ज्ञान के अलंकार हैं। ल॰ना॰ को सतयुग के राजे ..... उन्हों को अलंकार कहाँ हैं? पालना तो दो रूप से करते हैं; परन्तु विष्णु को दिखाए जाते हैं कि हम सम्पूर्ण बनते हैं तो यह अलंकार हैं। सम्पूर्ण रूप है विष्णु का। तो यह एम–ऑब्जेक्ट है। कहेंगे, आगे जन्म में हम ....या था तभी ऐसे बने हैं। अलंकार तो सम्पूर्ण को ही शोभते हैं।

..... जन्म में पवित्र बनने से फिर हम कमल फूल समान सतयुग में रहते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते, राजाई (क)रते हुए हम पवित्र हैं। यह भी समझाने की प्वाइंट है। जिनकी बुद्धि में बखर भर जाता है वो फिर कभी ठहरेंगे नहीं। .....में भी नं॰वार हैं। उत्तम–मध्यम–कनिष्ठ। कनिष्ठ में थोड़ा बखर कहेंगे। मध्यम घोड़ेस्वार में कुछ बखर ... गा। महारथी,घोड़ेसवार,प्यादे हैं ना। उत्तम माना उत्तम। तो पुरुषार्थ कर सभी को उत्तम बनना चाहिए। ज्ञान की (धा)रणा कर। बी.के. में बड़ी चुस्ती युक्ति चाहिए। बाबा है रांझू रमज़बाज़। तो जब ऐसे बने तब अच्छा है, (न)हीं तो वेस्ट ऑफ एनर्जी, वेस्ट ऑफ मनी है। यहाँ तो वेस्ट ऑफ मनी नहीं होती; क्योंकि शिवबाबा को .....ते हैं कि हमें फिर नई दुनिया में देना; जैसे भक्तिमार्ग में गरीबों आदि की सेवा करते हैं, तो भी आ... ...मा करती हो। भक्तिमार्ग में है इनडायरैक्ट। यहाँ है डायरैक्ट और दाता भी वो है। कितनी बातें हैं समझाने ...लिए। बाप कहते हैं इस पढ़ाई से तुम सो देवता बनेंगे। देवता तो राजा भी है तो प्रजा भी है। मानुष से (दे)वता तो बनेंगे। स्वर्ग में ज़रूर जावेंगे। ये तो गारन्टी हो जाती; परन्तु पद कौन–सा पाना है वा धारणा कर पुरुषार्थ करना है सूर्यवंशी कुल में जाने का। बाबा कहते हैं घर2 को स्वर्ग आश्रम बनाओ अथवा मानुष को नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाओ। इनको ही स्वर्ग आश्रम कहेंगे। इस समय तो नरक है। गंगा (न)दी में स्नान करने जाते हैं, समझते हैं स्वर्ग में जावेंगे तो इसका मतलब नरक में है। सब नरक .....नान करते रहते हैं। जब भारत में स्वर्ग होगा तो फिर वहाँ जावेंगे; परन्तु जब पावन बने तब तो .....वे। अच्छा, बहुत मीठा2 बाप है, मम्मा–बाबा को भी मीठा बनाने वाला है बाप। बलिहारी उनकी है ..... से बाप फिर दादा, मम्मा का लकी स्टार्स प्रति यादप्यार वा गुडमॉर्निंग। सितारे तो बहुत हैं, उनमें नम्बरवार हैं। कोई बहुत तीखा चमकते हैं। बाकी वो सूर्य–चाँद कोई देवताएँ नहीं हैं। हर एक बा.... अर्थ भरा पड़ा है। देवताएँ तो हैं ही सूक्ष्मवतन वासी। फिर इन सूर्य–चाँद को देवता कैसे कह सकते ... तो रोशनी देने वाले सदैव हैं ही हैं। ॐ

चैम्बूर 2/12/62 :– इन चित्रों पर समझाना तो बहुत (स)हज है और फिर साथ2 मेडल निशानी भी ज़रूर चाहिए। इस समय लड़ाई की धामधूम है तो तुम ..... मेडिलाय पर समझाई(ए) सकती हो– कैसे हम मायाजीत–जगतजीत बनते हैं। जैसे ये श्री कृष्ण है, मेडल पर ..... लिखा हुआ हो– मायाजीत–जगतजीत, माया के साथ रावण अक्षर हो तो और ही अच्छा, रावण जीत (ज)गतजीत। ज़रूर जब रावण मरा तब तो जय–जयकार हुई। बाबा कहते हैं– मनुष्यों का ये भूल करना भी (ड्रा)मा में नूँध है। भूल न करे तो मैं क्यों आऊँ? भुट्टू न बने तो मैं आकर स्याणा कैसे बनाऊँ? बरोबर भारत (5)000 वर्ष पहले नम्बरवन सेन्सीबुल था। अब नॉनसेन्सीबुल है। इन गुरु–गोसाई आदि ने और ही नॉन (से)न्सीबुल बनाया है। इनकी मत पर चल खून की नदियाँ बहावेंगे। श्रीमत पर नहीं ..... चलते। विनाश होना ही है। ड्रामा को रिपीट करना ही है। अब माया का एपिसोड प्रैक्टिकल में रिपीट हो रहा है। यादव, (कौरव) और पाण्डव भी हैं। कैसे, सो आकर समझो। बाबा तो दीवारों पर भी चित्र बनवाने चाहते हैं। बनाने सभी चाहिए। इन एडवांस सब कुछ कट्ठा किया जाता है ना। लड़ाई के लिए भी देखो कितना कट्ठा रहे। हमारी फिर है ये योगबल की लड़ाई। तो बाबा कहते हैं इन लॉकेटों में भी बहुत ज्ञान है। त्रिमूर्ति और .... का लॉकेट अर्थ सहित है सिर्फ शिव का लगाने से इतना ज्ञान सिद्ध नहीं होता। त्रिमूर्ति और कृष्ण में (सा)री नॉलेज आ जाती है। बाबा तो इन चीज़ों का कारखाना बनाने वाला है। हमारे पास कैपलिस्ट(कैपिटलिस्ट) बहुत ..... पास है मदद करने वाले तो शिवबाबा पास कैपलिस्ट(कैपिटलिस्ट) नहीं होंगे! बाबा किसका भी सौभाग्य (ब)नाने चाहे तो झट डायरैक्शन दे सकते हैं। वो गवर्मेन्ट तो लेती है तो देती कुछ भी नहीं। बाबा तो ...कर सौगुना कर देते हैं। वण्डर है ना। ॐ